

## नवाचार के वरिधाभास

### सन्दर्भ

- नवाचार के संदर्भ में हाल ही में कुछ अच्छी खबरें आई हैं। भारत वर्ष 2017 के वैश्विक नवाचार सूचकांक में एक साल पहले की तुलना में छह पायदान की वृद्धि कर 60वें स्थान पर आ गया है। यद्यपि वर्ष 2015 में मली 81वीं रैंक से तुलना करें तो भारत ने नवाचार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति की है।
- त्रनिदिद एंड टोबैगो, बोसनिया हर्जेगोविना और मोरक्को जैसे देश भी उस समय 140 से अधिक देशों की रैंकिंग में भारत से बेहतर स्थिति में थे। भारत में नवाचार के प्रयासों का अंदाज़ा अंतरराष्ट्रीय पेटेंट के लिये दाखलि आवेदनों से भी लगाया जा सकता है। जनिवा स्थिति विश्व बौद्धिक संपदा संगठन के आँकड़ों के मुताबिक भारत की तरफ से दायर पेटेंट आवेदनों की संख्या 8.3 फीसदी बढ़कर 1,529 हो गई, जबकि एक साल पहले यह 1,423 थी। उपरोक्त आँकड़ों पर नज़र दौड़ाएँ तो यही प्रतीत होगा कि भारत नवाचार के मोर्चे पर दनि दूनी-रात चौगुनी प्रगति कर रहा है, हालाँकि ऐसा है नहीं। इस लेख में हम यह देखेंगे कि नवाचार के वरिधाभासों में क्या सम्मिलित है और कैसे इन्हें दूर किया जा सकता है? लेकिन, इससे पहले गौर करते हैं कुछ चतिजनक आँकड़ों पर।

### चतिजनक आँकड़ें?

- वैश्विक नवाचार सूचकांक में भारत के बेहतर प्रदर्शन से कुछ लोग तो इस कदर उत्साहित हैं कि वे भारत में बड़ी कंपनियों के साथ ही सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में भी नवाचार के बड़े पैमाने पर घटति होने का दावा करने लगे हैं। दुर्भाग्य से हाल ही में घोषित उच्च शक्ति संस्थानों की टाइम्स रैंकिंग के अनुसार दुनिया के शीर्ष 100 शक्ति संस्थानों की सूची में भारत का कोई भी विश्वविद्यालय जगह नहीं बना पाया है।
- वदिति हो कि पिछले ही साल भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) को एशिया के सर्वाधिक नवोन्मेषी विश्वविद्यालयों की रैंकिंग में नचिला पायदान मिला था। 'रॉयटर्स' की एशिया के सर्वाधिक नवोन्मेषी विश्वविद्यालयों की सूची में आईआईटी 71वें स्थान पर था।
- उपरोक्त सूची, वजिज्ञान को आगे बढ़ाने, नई तकनीकों की खोज और विश्व अर्थव्यवस्था के लिये मददगार तकनीकों ईजाद करने में एक पहल के आधार पर तैयार की गई थी। आईआईटी के अलावा भारतीय वजिज्ञान संस्थान, बंगलूरु इस सूची में शामिल एक अन्य भारतीय संस्थान था, जसि 72वां स्थान मिला था।
- यहाँ सवाल यह है कि अपने उच्च शक्ति संस्थानों के वैश्विक रैंकिंग में लगातार नरिशाजनक प्रदर्शन करने वाले देश में नियमति तौर पर कसि तरह का नवाचार चल रहा होगा? दरअसल, भारत में 70 फीसदी से भी अधिक पेटेंट आवेदन बहुराष्ट्रीय कंपनियों की ही तरफ से दाखलि किये गए हैं। इसमें भारतीय कंपनियों और वदिवानों की हसिसेदारी केवल 30 फीसदी ही है।
- अधकिंश भारतीय विश्वविद्यालयों में शोध पर उतना ध्यान नहीं दया जाता है। फलस्वरूप, अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग में वे महज शक्ति की दुकानें बनकर रह जाती हैं। यही वजह है कि भारत में शोध के मामले में केवल दो संगठन- आईआईटी और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ही प्रतषिठा हासलि कर पाए हैं।
- एक चतिनीय तथ्य यह भी है कि भारत में प्रतलिख आबादी पर शोधकर्त्ताओं की संख्या महज 15 है।

### क्या है नवाचार के वरिधाभास?

- नवाचार के मोर्चे पर पहला वरिधाभास यह है कि स्टार्टअप को प्रोत्साहन देने के मामले में भारत दुनिया का तीसरा बड़ा देश बन चुका है, लेकिन यहाँ अभी भी कामयाब नवाचारों का अभाव है। बड़ी संख्या में भारतीय उद्यमी नाकाम हो रहे हैं।
- दूसरा वरिधाभास यह है कि भारत दवाओं के भरोसेमंद एवं कफियाती वनरिमाता के तौर पर स्थापति हो गया है और दुनिया भर में 20 फीसदी जेनेरिक दवाओं की आपूर्ति कर रहा है, लेकिन स्वास्थ्य संबंधी सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के मोर्चे पर यह 188 देशों में 143वें स्थान के साथ नरिशाजनक स्थिति में है।
- एक और वरिधाभास यह है कि शोध एवं विकास कार्यों पर कर रियायतें देने के मामले में भारत शीर्ष पर है। इसके बावजूद भारत की गनिती शोध के मामले में पिछड़े देश के तौर पर ही होती है।

### क्या हो आगे का रास्ता?

- भारत में करीब 90 फीसदी स्टार्टअप कामकाज शुरू होने के पाँच वर्षों के दौरान ही असफल हो जाते हैं। ऐसा इसलिये है क्योंकि नवाचार की अहमयित को नकारते रहे हैं। अतः यह आवश्यक है कि स्टार्टअप नवाचार के महत्त्व को पहचाने और अपने काम-काज में इनका प्रमुखता से उपयोग करें।
- भारत सहयोगपूर्ण शोध एवं विकास टैक्स क्रेडिट (शोध संकायों, विश्वविद्यालयों और राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं में शोध के लिये दी जाने वाली रकम)

और नवाचार के वाणज्यिक इस्तेमाल को प्रोत्साहन देने के मामले में पछिड़ा हुआ है। हमें अपने नीति-निर्माताओं से यह उम्मीद करनी चाहिये कि वे इस ओर ध्यान केन्द्रित करें।

- ध्यातव्य है कि प्रत्येक पाँच भारतीय वनिर्माता कंपनियों में से केवल एक ही कंपनी काम के दौरान प्रशिक्षण देती है, जबकि चीन में 92 फीसदी और दक्षिण कोरिया में 42 फीसदी कंपनियों ऐसा करती हैं। अतः प्रशिक्षण को बढ़ावा देना चाहिये, ताकि नवाचार को प्रोत्साहन मिल सके।

### नविकरष

दरअसल, भारतीय शोध एवं शैक्षणिक संस्थानों की खराब स्थिति के चलते लगभग प्रत्येक क्षेत्र में आज प्रतर्भाओं का अकाल सा पड़ गया है। इसका नतीजा यह हुआ है कि पिछले 60 वर्षों में भारत कोई भी यादगार आर्थिक प्रभाव डालने लायक अनूठा नवाचारी वचार पेश नहीं कर पाया है।

आज़ादी के बाद से कोई भी भारतीय नागरिक तकनीकी क्षेत्र में नोबेल नहीं जीत पाया है। वर्ष 1930 में सी. वी. रमन ने वज्जान एवं प्रौद्योगिकी का नोबेल जीता था। चीन और अमेरिका जहाँ नवाचार के मामले में उल्लेखनीय प्रगत कर रहे हैं, वहीं अभी भी भारतीयों का पसंदीदा वषिय 'जुगाड़' ही है। यहाँ तक कि प्रबन्धन के गुर सखाने वाली कई कर्ताबों में प्रचलति 'भारतीय जुगाड़ तकनीक' की तारीफ की गई है। यही वे कारण हैं, जिनकी वज़ह से छोटे व्यवसाय नई तकनीक में नविश से परहेज़ करते हैं। नवाचार को बढ़ावा देने के लिये जनमानस को भी अपनी जुगाड़ मानसकता में बदलाव लाना होगा।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/paradox-of-innovation>

